आधुनिकता : पहचान का संकट

सारांश

आधुनिकता के बोध को पहचानने के लिए बहुत कम जुगाली की गई है। आधुनिकता का सामान्य अर्थ नयेपन से है जो परम्परागत नहीं है। आधुनिकता के समाज में कई तरह के रूप मिलते हैं। हकीकत में आधुनिकता परम्पराओं और रूढियों को पूरी तरह से खारिज नहीं करती है, बल्कि उसकी सड़ी–गली मान्यताओं का विरोध करती है। आधुनिकता रूढियों को तोड़कर नयी परम्पराओं की रचना के लिए इतिहास बोध का सहारा लेती हैं। यह सच है कि आधुनिकता इतिहास के आलोक में वर्तमान में खड़े व्यक्ति को अपने युग को गढ़ने की शक्ति प्रदान करता है। आधुनिकता अपने परिवेश के प्रति सचेत करने के साथ नकारात्मक शक्तियों से टकराने की प्रेरणा देती है। आधुनिकता का चरित्र संघर्षशील हैं। आधुनिकता का संघर्षशील चरित्र पूँजीवाद के लिए घातक था। इसलिए पूँजीवादी समाज में आधुनिकता को स्वार्थपूर्ति का माध्यम बनाकर ढाला गया। इस दृष्टिकोण को औद्योगिक विकास के साथ जोड़कर देखा गया। औद्योगिक विकास ने समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन तो किया परन्तु व्यक्तिवादिता, अकेलेपन, संत्रास, टूटन जैसी प्रवृत्तियों को जन्म दिया जो आगे चलकर आधुनिकता के लक्षण के रूप में चस्पा हो गयी। आधुनिकता की अवधारणा पश्चिम में तैयार हुई। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का परिवेश शीत–युद्व राजनीति के तहत हुआ। इस आधुनिकता की जड़े 19वीं सदी के नवजागरण में देखी जा सकती है। नवजागरण के बुद्धिवाद ने साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास, रूढियों, जातिवाद पर प्रहार किया और इतिहास की रोशनी में वर्तमान की समस्याओं को सुलझाने के लिए तर्क की कसौटी पर कसने के लिए प्रेरित किया। भारत में कई सुधारवादी आन्दोलन अस्तित्व में आये और उनका कई कुरीतियों को सुधारने में सक्रिय योगदान रहा। एक समय के बाद जब नवजागरण की लहर ठण्डी पड गयी, चेतना के वाहक बुद्धिजीवियों को पूँजीवाद में अपनी चपेट में ले लिया और पूँजीवाद प्रभावी हो गया। वैश्वोकरण के दौर में समाज स्वार्थ और प्रतिद्वन्दिता के दलदल में फँस गया। नवजागरण में समानता, बन्धुता और संकीर्णता से मुक्ति का स्वप्न बिखर गया। आज आधुनिकता का जो स्वरूप सामने आ रहा हैं, जिसकी पहचान मुश्किल कार्य है।

हबीब खान
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय बाँगड महाविद्यालय,
डीडवाना, भारत

मुख्य शब्द : नैतिकता–बोध, बहुपक्षीय, संत्रास, संघर्षशील, स्वचेतन, कुर्बानी, मुस्लिम तुष्टीकरण।

प्रस्तावना

आधुनिकता चर्चित और विवादी धारणाओं में से एक धारणा है, जिसको आज भी विद्वान एक मत से स्वीकार नहीं कर सके हैं। यह धारणा नैतिकता बोध और सौन्दर्यबोध के समान सतत विकासमान एवं बहुपक्षीय अवधारणा है। युगीन मूल्यों और वैचारिक दृष्टिकोण की भिन्नता के आग्रह के कारण विवादों से घिरी हैं। इसकी पहचान सरल कार्य नहीं है। यह अवधारणा कई तरह के सवाल पैदा करती है, अपने बोध को लेकर यह तय करना मुश्किल कार्य है कि इसे देश की कसौटी पर कसना हैं या काल की कसौटी पर या दोनों पर ? इसे ऐतिहासिक दृष्टि से आँकना सही है या इसे निरन्तरता में खोजना सही है? आधुनिकता और नवीनीकरण का परम्पराओं से क्या सम्बन्ध है ? पाश्चात्य विचारधारा के आधार पर हिन्दी साहित्य को परखना है या अपनी विचारधारा गढनी है? आधुनिकता को पहचानने के आधार क्या है?

आधुनिकता पूर्णरूप से मानसिक प्रक्रिया है जिसमें मन और विवेक की परम्परागत रूढियों से मुक्ति का मार्ग होता हैं। अनुपयोगी घिसी–पिटी निरर्थक रीतियों, अंधविश्वास और समाज के स्वभाविक विकास में बाधक मान्यताओं से मुक्ति दिलाने वाली मानसिकताएँ आधुनिकता की अवधारणा है।

अध्ययन का उद्देश्य

आधुनिकता को समझना, समाज में खोजना और इसका विश्लेषण करना ज्ञान की धारा में योगदान से कम काम नहीं है। प्रस्तुत आलेख में इसे सरल भाषा में समझने का विनम्र प्रयास है।

भाोध–प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में विवरणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से अर्थ, अवधारणा, स्वरूप को समझना तथा विश्लेषणात्मक और विचारात्मक प्रविधि द्वारा विमर्श को समझने का विनम्र प्रयास किया गया है।

आधुनिकता का अर्थ

आधुनिकता का प्रारम्भिक प्रयोग 'थियोलोजी' के संदर्भ में देखने को मिलता है। आधुनिकता जिस 'Modernity' शब्द की हिन्दी है वह अंग्रेजी में ग्रीक 'मोडो' (क्रियाविश्लेषण) से आया है। जिसका अर्थ है हाल फिलहाल, अभी का, आज, इस समय का। समकालीन आधुनिकता की उत्त्पति 5वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लैटिन शब्द 'मौडर्नस' से हुई है जिसका प्रयोग औपचारिक रूप से ईसाई वर्तमान को गैर–ईसाई रोमन अतीत से अलग करने हेतु किया गया था। आधुनिकता के बारे में विचारजगत में यह मान लिया गया है कि यह एक यूरोपीय धारणा हैं परन्तु व्यवहार जगत इससे भिन्न हैं। आधुनिकता का एक विश्व सम्मत मॉडल नहीं हो सकता है। एशियाई और अफ्रीकी देशो में इसका मॉडल विकसित नहीं हो सका इसलिए पश्चिमी अवधारणा का चोला पहना दिया गया। यूरोपीय देशों में इस विचारधारा का स्पष्ट इतिहास रहा है। यूरोप में आधुनिकता की शुरूआत पुर्नजागरण से मानी जा सकती है। सामान्य प्रयोग में 'आधुनिक' शब्द बहुत दूर तक समय सापेक्ष मान लिया जाता है, जैसे इतिहास का विभाजन करते समय प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल। आधुनिक शब्द इतना लचीला है जिसके अनुसार हर अगला काल अपने पूर्ववर्ती की अपेक्षा आधुनिक होता है। आधुनिकता की अनिवार्य शर्त स्वचेतना है। स्वयं इतिहास को लिया जाये ता काल विभाजन की विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास में आगामी काल, धीरे–धीरे छोटे होते जा रहें हैं। युग प्रवृत्तियों को इतना शीघ्र परिवर्तन और उसका इतना शीघ्र अनुभावन गहरी स्वचेतना से ही संभव है। अपने आलेख 'What is history' शीर्षक व्याख्यान क्रम में प्रसिद्ध इतिहासकार कार नें ध्यान दिलाया है, 'पिछले युगों में आर्थिक विकास में उन्मुक्त व्यापार का सिद्धान्त प्रचलित था पर आधुनिक युग में नियोजित अर्थ व्यवस्था को महत्त्व दिया जा रहा है। उन्मुक्त व्यापार–प्रणाली और नियोजित अर्थव्यवस्था में बीच आधारभूत अन्तर स्वचेतना वृत्ति का ही है।'[1]

आधुनिक शब्द की उत्पति अधुना शब्द में 'इक' प्रत्यय से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ है इसी क्षण, अत्यन्त नूतन, तुरन्त। सामान्यत आधुनिक शब्द तीन अर्थों में प्रयोग किया जाता है– समय सापेक्ष, नये का वाचक, किसी विशिष्ट दृष्टिकोण या जीवन दर्शन के रूप में। आधुनिक शब्द का प्रयोग यूरोप में छठी शताब्दी में शुरू हुआ। उस समय इसका अर्थ विवरण था। जो पूर्व को वर्तमान से अलग करता था। जर्मन इतिहासकार क्रिस्टोफर ने प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक स्थापना की जो आज तक विश्व के सभी क्षेत्रों में इतिहास अध्ययन में प्रचलित है।

आधुनिकता को पूरी तरह से समझने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि उन तत्त्वों को खोजा जाये जिनके आधार पर आधुनिकता मध्यकालीनता से अलग हो गई। मध्यकालीन चिन्तन मुख्य रूप से ईश्वर पर केन्द्रित है। इसमें मनुष्य की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई, लकिन इस श्रेष्ठता का महत्त्व तभी है जब मनुष्य साधना कर या अन्य उपाय से मुक्ति प्राप्त कर लें। आधुनिकता में माया की श्रेष्ठता स्थापित है। इस युग में भौतिकवादी संस्कृति के कारण अर्थ प्रधान हो गया। आधुनिकता तर्क प्रधान है जबकि मध्यकालीनता श्रद्धा प्रधान थी। आधुनिकता ऐहिकता प्रधान है जबकि मध्यकालीनता पारलौकिक प्रधान थी। आधुनिकता में जीवन के संघर्षों ओर सुख दुख पर अधिक बल दिया जाता हैं जबकि मध्यकालीनता मृत्यु के बाद की स्थिति के लिए व्यग्र थी। इस अन्तर को अवधारणा के स्तर पर समझा जा सकता है।

आधुनिकता की अवधारणा

वैज्ञानिक दृश्टिकोण

आधुनिकता की यह अवधारणा किसी विषय को भौतिक कसौटियों पर कसकर तर्क के आधार पर स्वीकार करती है।रामधारी सिंह दिनकर आधुनिक बोध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अनिवार्य मानते है। वे आधुनिकता को अंधकार से बाहर निकलने, नैतिकता में उदारता बरतने और बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया कहते है।[2]

एक प्रकिया

प्रत्येक स्थापित सत्य और मूल्य को शाश्वत–स्थायी मानकर आँखे मूँदकर स्वीकार कर लेना आधुनिकता नहीं है। डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है, 'प्रश्न चिन्ह की निरन्तरता में आधुनिकता वह प्रक्रिया है जो समसामायिकता के माध्यम से व्यक्त हो रही है।'[3] जीवन दृष्टि की व्यवहारिकता, यथार्थपरखता और भावुकता के स्थान पर विवेक का नियंत्रण होने के कारण वैज्ञानिक हो जाना आधुनिकता की पहचान है। डॉ. नगेन्द्र ने विवेक युक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आधुनिकता का अनिवार्य तत्त्व स्वीकार किया है। कालऐतिहासिक चेतना और समसामायिकता भी आधुनिकता के तत्त्व हैं।

एक वृत्ति

डॉ. धनंजय वर्मा ने आधुनिकता की पहचान को प्रवृत्ति ही नहीं, वृत्ति कहा हैं। इस वृत्ति की पहचान स्थापन की अपेक्षा विस्थापन में अधिक निहित है। उनका मानना हैं, विज्ञान का नये से नया अन्वेषण पहले हमें नई व्यवस्था के लिए विवश करता हैं और पुरातत्त्व की परतें आपसे टूट बिखर जाती है।[4] आधुनिकता की टकराहट सबसे पहले धर्म से होती है। कोई भी नया बोध पहले स्थापित बोध से टकराता है तो पुरातन और मध्यकालीन

बोध अपने द्वारा अनुशासित विचारधारा में बदलाव पैदा होता है। तत्कालीन व्यक्ति की सोच धर्म–प्रेरित आस्था, विश्वास, श्रद्धा भाव जो सामान्य है विज्ञान सम्मत दृष्टिकोण से उसकी नींव हिल जाती है और एक–एक करके दीवारें ढह जाती है।

ऐतिहासिक दृश्टि

प्रत्येक युग की अपनी आधुनिकता होती है, जो पुरातन मूल्यों पर विजय प्राप्त कर प्रगतिशील मूल्यों की स्थापना कर सामाजिक जीवन में प्रगति लाती है। आधुनिक होना आधुनिक मनुष्य का एकाधिकार नहीं रह जाता है, क्योंकि आधुनिक मनुष्य अर्जुन, कौटिल्य, कबीर भी थे। इससे पहले भी आधुनिक युगों की कौंध हुई है।

निशेध वादी दृश्टिकोण

आधुनिकता में परम्परा विरोध के साथ नैतिकता, मर्यादा, संस्कार, सामाजिकता का खुला उल्लंघन और अस्वीकार भी एक आधुनिकतावादी विचार के रूप में सामने आता है। प्रत्येक दायित्त्व के विमुख आत्मसुख, क्षणिक उन्माद, आवेश, आक्रोश और नितान्त सुख भोग का दर्शन भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

एक वि�िाश्ट द�र्ान

पश्चिम में आधुनिकता का विस्फोट हुआ। अस्तित्ववादी दर्शन इस आधुनिकता की बुनियाद है। वह व्यक्ति के स्वच्छंद आत्म निर्णय से जुड़ी विचारधारा है। व्यक्ति और उसका संकट, संघर्ष और नियति विचारणीय विषय है। डॉ. धर्मवीर भारती के शब्दों में 'इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ कि आधुनिकता वर्तमान संदर्भो में पूर्णता की खोज और उसकी अनिवार्य परिणति है। आन्तरिकता का पूर्ण प्रस्फुटन और पश्चिम का अंतर भी उतना महत्त्वपूण नहीं है क्योंकि अन्तोगत्त्वा आधुनिक साहित्य की चिन्ता और आधुनिक मानव की नियति विभाजित नहीं है।' [5]

एक मानसिकता

आधुनिकता के आग्रहों के अधीन कृति के कथ्य को नहीं बदला जा सकता परन्तु रूप विधान, शिल्प, भाषा की बनावट में आधुनिकता के कारण बदलाव आ जाता है। आधुनिकता पूर्व में नियत और निर्धारित मानदंडों को नकार कर स्थिति, गति सापेक्ष दृष्टि की रचना करती है। नवीन दृष्टिकोण के कारण साहित्यकार को नवीन दृष्टि और नवीन तथ्य उपलब्ध होते है। वे परम्परागत साहित्य रूपों की जकड़न को अनुपयोगी समझ कर अन्य रूपों की ओर प्रवृत्त होते हैं। महाकाव्यों और प्रबन्ध काव्यों के स्थान पर लम्बी कविता का विकास आधुनिकता की देन है। प्रबन्ध काव्यों के प्रबन्ध ढीले होकर अन्ततः तिरस्कृत हो जाते है। कामायनी (जयशंकर प्रसाद), अंधेरे में (मुक्ति बोध), असाध्यवीणा (अज्ञेय), अन्धायुग (धर्मवीर भारती), मुक्ति प्रसंग (राजकमल चौधरी), पटकथा धूमिल कृतियाँ इसका प्रमाण है।

आधुनिकता का स्वरूप

डी.एच. लारेन्स आधुनिकता की शुरूआत 1915 से मानते है। लुकाच इसे अमूर्त, इतिहास–निरपेक्ष और तर्केतर कहता है। टी.एस. इलियट इसे युग की व्यर्थता और अराजकता का परिदृश्य कहता है। आधुनिकतावाद सम्बन्धी आलोचना इसी सिद्धान्त पर आधारित है कि समाज, इतिहास और यथार्थ से इसका कोई नाता नहीं है। कुछ विद्वान इसे फासीवाद का समर्थक मानते है। आधुनिकता की उत्त्पति पर विचार किया जाये तो आधुनिक जीवन की उथल–पुथल को जिम्मेदारियाँ अनेक स्थितियों पर निर्भर है। मार्शल वर्मन ने लिखा है 'भौतिक विज्ञान के महान आविष्कार जिसने दुनियाँ और दुनियाँ में हमारी स्थिति का ''इमेज'' बदल दिया है। उत्पादन का उद्योगीकरण जो विज्ञान को टेकनोलॉजी में बदलता है। शहरों की बढ़ोतरी, दूरसचार के माध्यम आदि का विकास इसी का नाम आधुनिकीरण है। इस प्रक्रिया में हमारी वैश्विक दृष्टि परिवर्तित हुई है और हम अन्य देशों के नजदीक आयें है। आधुनिकीकरण की यौगिकता, भीड़ भाड़, शहरों की बाढ़ में हम पदार्थीकरण होते जा रहे है।'[6] (ऑल डेट इज सॉलिड मेटल्स इन टू एअस)

सेमुअल बियर ने अपनी पुस्तक 'मॉडर्न पोलिटिकल डवलपमेंट में आधुनिकता के स्वरूप को तय करने वाले गत्यातमक तत्त्वों के रूप में वैज्ञानिक बुद्धिवाद स्वेच्छावाद और जनतंत्री करण का उल्लेख किया है। प्रो. डेनियर लर्नर ने अपनी पुस्तक 'द पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सॉसायटी' में आधुनिककरण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है और पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया हैः–

1. जनतांत्रिक मूल्यों पर आधारित स्वतंत्रता, नगरीकरण में वृद्धि अर्थात समानता
2. संचार साधनों की वृद्धि फलस्वरूप शिक्षा का प्रसार
3. आर्थिक और राजनैतिक सहभागिता में वद्धि
4. सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि
5. संस्कृति में धर्म–निरपेक्ष और तार्किक मापदण्डों का सामावेश

उपयुक्त कारकों का विश्लेषण किया जाये तो भारतीय आधुनिकता का स्वरूप क्या हो रहा है, सहज ही समझा जा सकता है। आज आधुनिकता मे जीवन मापन करने वाला हर व्यक्ति अपने कल से भयभीत है और इसी भय के कारण प्रतिस्पर्धा की दौड में शामिल होकर अपने आने वाले कल के लिए काटे बीज रहा है। स्पर्धा ने व्यक्ति की ईर्ष्या को बढ़ा दिया है। आधुनिकता के आड़ में ऐसे कई काम कर रहा है, जिसकी अभिव्यक्ति शायद सम्भव नहीं है। तहजीब पर पश्चिम का हथोड़ा चल रहा है। फैशन के नाम पर बरबादी का जश्न मनाया जा रहा है। हिन्दी भाषा के विद्वान/प्रोफेसर भी अंग्रेजी का तड़का लगाने में अपनी शान समझते है।

हिन्दी साहित्य और आधुनिकता

हिन्दी साहित्य में आधुनिकतावादी विचारधारा का आविर्भाव तीस–चालीस के दशक में माना जा सकता है। 1941 में अज्ञेय की 'शेखरः एक जीवनी' का प्रकाशन हुआ जो पारम्परिक रूप से नैतिक मान्यताओं को ध्वस्त करता है। हमारा देश पूँजीवादी व्यवस्था, भारत चीन आक्रमण और पश्चिमी प्रभाव के कारण आधुनिकता का प्रसार हुआ लेकिन पश्चिमी आधुनिकवाद भारतीय आधुनिकवाद से भिन्न है, 'डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है, 'आधुनिकता के

बोध में मध्यकालीन और रोमांटिक बोध दोनो का अस्वीकार है। इसमें प्रश्न चिह्न की निरन्तरता है। शाश्वत और चरम का अस्वीकार चिन्तन और संवेदना दोनों स्तर पर है। इसमें कभी अजातीयता को खोजा गया है तो कभी उद्देश्यहीनता को तलाशा गया है। "[7]

हिन्दी साहित्य में उपन्यास अभिव्यक्ति सशक्त विधा रही हैं। भारतीय साहित्य में आधुनिकता की शुरूआत गोदान (1936) से मानी जा सकती है। डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है, 'इस उपन्यास में लेखक ने अपनी परम्पराओं को तोड़ा है। इसके अंत को खुला छोड़ दिया है, इसका अन्त उपन्यास से बाहर हो जाता है। इसका अन्त इनके पहले उपन्यासों के तरह बंध न होकर खुलने की गवाही देने लगता हैं। इनमें समस्या का समाधान नहीं दिया गया है। इनके अंत में होरी के धराशायी होने को स्थिति में, मातादीन को सामने खडा होने की स्थिति में और धनिया को पछाड़ खाकर गिरने की स्थिति में छोड़कर इसके अन्त को खुला छोड़ दिया गया है, जो आधुनिकता की चुनौती का परिणाम है। उपन्यासकार की पुरानी आस्था टूट चुकी है।' [8]

आधुनिक विमर्श: आधुनिकता के प्रभाव से विमर्श पर पड़नें वाले प्रभावों की संक्षिप्त चर्चा करना प्रासंगिक है–

हिन्दी भाषा विमर्श

हिन्दी भाषा उतनी ही पुरानी है जितनी भारतीय आधुनिकता। हिन्दी भाषा की आधुनिकता पर विचार भारतीय आधुनिकता की विशाल घटक पर विचार करने जैसा है। हिन्दी की दुनिया जब आधुनिकता पर विचार करती है तो आत्म लोचना करती है और अग्रेंजी भाषा जब विचार करती है तो इस अंदाज में करती है कि पूरी गलतियाँ हिन्दी भाषा में ही है। हिन्दी भाषा की दुनिया में जब नये विचार आते है तो उसका नाम और विरासत तो वहो रहती है उसके भीतर नई तरह पैचीदगियाँ पैदा हो जाती है। अन्धानुकरण में टोपी तो लेव टालस्टॉय जैसी खरीदी जा सकती है, मगर वैसा सिर कहाँ से लायगें। इसका भी ध्यान रखना होगा।

नारीवाद विमर्श

हिन्दी साहित्य का नारीवादी विमर्श और साहित्य साहित्यत्तेर लेखन के जरिए संधारित हो रहा है। यह विमर्श मुख्य रूप से तीन घटकों में बाँट कर समझा जा सकता है। सभी अधिकारों की दावेदारी बनाम स्त्री देह का प्रश्न, दूसरा है मातृत्व बनाम घरेलु आधुनिकता का प्रश्न और तीसरा दलित स्त्रीवाद और नारीवाद आंदोलन। सेक्युअलिटी विमर्श को हिकारत की नजर से देखने के कारण समाज में उमड़ रहें प्रेम के रूप नये सवाल पैदा कर रहे हैं। तलाक के बढते मुकदमों के रूप में, लिव इन रिलेसनशिप, उपभोक्ता क्रान्ति के हमलावर के रूप में सामने आ रहे हैं। कभी वेश्याओं (सेक्स वर्कर) को चुनौती के रूप में सामने आ रहा है। आज के नारीवाद के बारे में इतना तो कहा जा सकता है कि वह यौन पवित्रता के पुरूष निर्धारित मापदण्डों पर खड़ी उतरने वाली लडकी को नियमों में बाँधने तक सीमित नहीं रहा है। अधिकांश विवाहित स्त्रियों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं आ सका है। जब तक पुरूष मानसिकता में बदलाव नहीं होगा और उसके सम्बन्ध नये सिरे से नहीं गढ़े जायेगे तब तक औरत बिना किसी इच्छा के प्रेमहीन (सेक्स वर्कर) के लिए मजबूर रहेगी।

मातृत्त्व के स्तर पर सभी को श्रेष्ठतर करार देकर शोषण किया जा रहा है। भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के चलते सौन्दर्य प्रतियोगिता, ब्यूटीपार्लर संस्कृति की चपेट में आ रही नारी को दिशाहीन कर दिया है। मातृत्त्व को नये सिरे से परिभाषित करना घरेलू आधुनिकता की पुनर्रचना करने के लिए अनिवार्य है।

दलित विमर्श

अबेडकरवाद का महाराष्ट्र से उत्तर भारत के सफर में ही उसका स्वरूप बदल गया है। ब्राह्मणवाद के विरूद्ध खडा होने वाला आंबेडकरवाद ने क्या शक्ल धारण कर ली है, आज दलित विमर्श नया दिशा में मुड़ रहा है। दलित बुद्धिजीवी उतर प्रदेश में बहुजन समाज की चुनावी कामयाबी का पूरी तरह से न समर्थन करते है और न ही विरोध। उन्हें लगता है कि कांशीराम और मायावती की राजनीति आंबेडकरवाद के विमर्श से भटक गयी है। उन्हें मायावती का सर्वजन सूत्र हजम नहीं हो रहा है, लेकिन दूसरी तरफ यह भी देख रहे है कि बसपा की कामयाबी के कारण बाबा साहेब को राष्ट्र स्तर पर स्थापित कर सकी है। आरक्षण और संसदीय राजनीति में धरातल पर काबिज दलित मध्यवर्ग आज तक उँची जातियों की प्रधानता वाले मध्यम वर्ग की मुख्य धारा में स्थान प्राप्त नहीं कर सका है। डॉ. अभय कुमार दुबे ने सही लिखा है, 'मौजूदा जाति विमर्श में दलितों की मध्य वर्गीकरण की प्रकिया चल रही हैं। जो बदल कर जातीय आधार पर गोलबंदी की तरफ जा सकती है। आज जो बहस मनुवाद बनाम बहुजन वाद के संदर्भ में चलती है वह राज्य बनाम दलित के रूप में परिवर्तित हो सकती है।[9] आरक्षण का लाभ उठाकर शिक्षा और नौकरी में सहभागिता से दलित आधुनिकता की तरफ बढ रहे है। देश में राजनीति की हवा को पहचानने लगे है।

मुस्लिम विमर्श

राष्ट्रवाद जो मार्क्सवाद, वामपंथ और उदारतावाद के औजारो से बना था, आज वह किस रंग में रंग गया है बताने की जरूरत नहीं है। शिक्षा के पिछड़ेपन, सरकार की नीतियों, मुस्लिम तुष्टीकरण का भ्रम, सामाजिक एवं धार्मिक कारणों से मुसलमान आधुनिकता के साथ पिछड़े नजर आते हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर विदेशी युद्धों में कुर्बानी के बावजूद मुसलमानों से भारतीय होने का सबूत माँगा जा रहा है। आधुनिकता के परिदृश्य में अनेक विमर्श खड़े हो रहे है।

हिन्दुत्ववादी कहते है कि इस्लाम धर्म भारतीय नहीं है वे हिन्दू जो मुसलमान हो गये उनका राष्ट्रवाद संदेहास्पद है। दूसरी तरफ सेकुलरवादियों का प्रभावशाली दल गंगा–जमुनी तहजीब का नाम देता है और बताता है मुसलमानों ने इस देश का बहुत कुछ दिया है। आजादी के बाद मुस्लमानों के राष्ट्र निमार्ण में महत्वपूर्ण भूमिका

निभायी है। हिन्दुत्ववादी लोगो द्वारा मुसलमानों की एकरूकता को राष्ट्रीय संकट के रूप में स्थापित किया जाता है और बताया जाता है कि मुसलमानों की राष्ट्रभक्ति संदिग्ध है इसलिए उनको एकता राष्ट्र के लिए खतरा है। दूसरी ओर, हिन्दुओं को एक होने का आह्वान किया जाता है ताकि इस्लामिक एकरूपता का मुकाबला कर सके। 'गर्व से कहो हम हिन्दू है' इसी मान्यता से निकला प्रतीत होता है। मुसलमानों को आधुनिकता से जुड़ने के लिए शिक्षा का दामन पकड़ना होगा। अपनी सोच को विवेकशील और तार्किक बनाना होगा। मुसलमानों को अपनी मानसिकता में बदलाव करना होगा। पवित्र कुरान का आदेश ह, 'किसी कौम की हालत अल्लाह नहीं बदलता, जब तक कि वे खुद न बदले।'[10]

निश्कश

परम्परा से पूरी तरह विलगाव आधुनिकता नहीं हैं। परम्परा से वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का अनिवार्य विरोध नहीं है। दोनों ही एक स्तर पर रचनात्मक हैं। आधुनिकता कुछ विशिष्ट जड़वत परम्पराओं के ही विसर्जन का आग्रह करती है। यह सतत प्रक्रिया है जो विकास की तरफ उन्मुख होती है। यह अस्थायी है क्योंकि जो आज आधुनिकता है वह आनेवाले से पुरातन होगी।

व्यक्तिवादी धारणा संचालित आधुनिकता की अपनी सीमाएँ हैं। यह धारणा समाज चेतना से अलग होकर व्यक्तिनिष्ठता के घेरे में बंद हो जाने से परम्परा, इतिहास और समाज के लिए और विकासशील देश के लिए उपयुक्त आधुनिकता नहीं है। भारतीय स्थिति को समक्ष रख कर यथाथ के आग्रहों के बिना बोझल किए समाज–सम्बद्धता वाला वैज्ञानिक चिन्तन की दिशा वाली आधुनिकता ही इस देश के लिए जरूरी है।

अंत टिप्पणी

1. *हिन्दी साहित्य कोश, सम्पादक– डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी, 2000 पृ. 86–87*
2. *रामधारी सिंह दिनकर, आधुनिक बोध, पंजाब बुक भंण्डार, नई दिल्ली, 1973 पृ. 36*
3. *इन्द्रनाथ मदान, कविता और अकविता, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1967 पृ. 49*
4. *धनंजय वर्मा, आस्वाद के धरातल, विद्याप्रकाशन, दिल्ली 1983 पृ. 113*
5. *धर्मवीर भारती, पश्यन्ती, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी 1969 पृ. 108*
6. *डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2012 पृ. 23*
7. *इन्द्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिन्दी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2000 पृ. 74*
8. *वही, पृ. 146*
9. *डॉ. अभय कुमार दुबे, आधुनिकता के आयने में दलित, वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृ. 389*
10. *पवित्र कुरान, सूरह राअद–11*